नई दुनिया, भोपाल
3 FEB 2010

फलेगा-फूलेगा शिक्षा जगत?

शिक्षा जगत के लिए कहा जाता है कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे कोई आसमान जैसी विशाल चीज भी बांध नहीं सकती। जितनी शिक्षा लीजिए कम ही पड़ती जाती है। इसकी खूबी यह है कि यह पशु और मनुष्य में न सिर्फ अंतर करना सिखाती है बल्कि यह अंशमात्र से कण-कण की पहचान कराती है। विशाल से विशाल और दूर से अतिदूर आकाश-पाताल को भी पाने की हिकमत बताती है। इसीलिए दुनिया के माने हुए महान विचारक ने तो यहां तक कह दिया कि स्कूल खोलने का अर्थ है एक कारागार को बंद करने की पहल करना। इस संदर्भ में भारतीय चिकित्सा परिषद द्वारा नियमों में उदारता लाने से मध्यप्रदेश में जो तीस मेडिकल स्कूल खुलने की संभावना बनी है वह काबिले तारीफ है। इससे यह मानकर चलना चाहिए कि एक तरफ जहां शिक्षा जगत उन्नत होगा वहीं प्रदेश की सेहत में भी सुधार आएगा। खबर के मुताबिक एमसीआई के नए प्रावधानों के तहत मेडिकल कॉलेजों में पचास पीजी सीट बढ़ सकती हैं, वहीं तीन मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की भी सीट बढ़ सकती हैं। सबसे सुखद बात यह है कि साढ़े तीन वर्षीय पाठ्यक्रम के लिए तीस जिलों में मेडिकल स्कूल की स्थापना का रास्ता भी खुल जाएगा।

इन संभावनाओं के साथ यह मानकर चलना चाहिए कि प्रदेश सरकार ने जो ग्राम के स्वास्थ्य को सुधारने का सपना देखा है वह भी पूरा होता चला जाएगा। अभी मेडिकल का विद्यार्थी एमबीबीएस करने के बाद ग्रामीण अंचलों से अपनी प्रेक्टिस शुरू करना नहीं चाहता, लेकिन जैसे ही प्रदेश के तीस जिलों में मेडिकल स्कूल खुलेंगे वैसे ही इन चिकित्सकों का ध्यान गांव की ओर भी जा सकेगा। शहर के साथ गांव को भी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। यह कल्पना तभी मूर्त रूप ले सकेगी जबकि चिकित्सा के विद्यार्थियों में व्यवसायिकता की जगह मानव सेवा का भाव जाग्रत किया जा सके। बहरहाल यदि वाकई एमसीआई के प्रावधानों में ऐसा ही कुछ होने जा रहा है तो प्रदेश के लिए सौगात की तरह होगा, जिसका चहुंओर स्वागत किया जाना चाहिए। अंततः प्रदेश के शिक्षा जगत का हाल फिलहाल बहुत बुरा है, फिर चाहे वह मेडिकल का क्षेत्र हो या अन्य सामान्य या विषय विशेष के शिक्षा केंद्र। हर तरफ फर्जीवाड़े के समाचार आम होते मिल जाते हैं। शिक्षा केंद्रों के लिए कहा जाने लगा है कि ये ज्ञान के मंदिर कम और डिग्रियां बेचने की दुकानें अधिक प्रतीत हो रही हैं। जहां देखिए वहीं फीस के नाम पर मोटी रकम वसूली जाती है और पढ़ाई-लिखाई से संबंधित सामग्री का अभाव पढ़ने वाले विद्यार्थी को सालता रहता है। ऐसे में और मेडिकल स्कूल और अधिक सीटें बहुत कुछ परिणाम दे पाएंगी कहना थोड़ा मुश्किल है। फिर भी उम्मीद पर दुनिया कायम है अतः शिक्षा जगत की बेहतरी के लिए नाउम्मीद नहीं होना चाहिए।